E-CONTENT FOR SEMESTER II

प्रत्यक्षवाद – 1
(POSITIVISM – 1)

BY: SWATI SOURAV
POSTGRADUATE DEARTMENT OF SOCIOLOGY
PATNA UNIVERSITY

परिचय (INTRODUCTION)

- प्रत्यक्षवाद को घटना के व्यवहार की भविष्यवाणी और स्पष्टीकरण के संदर्भ में चित्रित किया गया है, एवं ज्ञान की खोज को निष्पक्षता, वैज्ञानिकता और तर्कसंगतता या तार्किक सोच के माध्यम से समझा जाता है।
- यह संदर्भित करता है कि सत्य को तर्क और तर्कसंगत विचार के माध्यम से खोजा जा सकता है।
- दुनिया को नियतात्मक कहा जाता है, जो कारण और प्रभाव से निर्धारित होता है।
- प्रत्यक्षवादियों का तर्क है कि ज्ञान मूलभूत अवधारणाओं से आता है जो सहज ज्ञान युक्त कारण से जाना जाता है।
- अनुभववाद और प्रत्यक्षवाद के बीच बुनियादी अंतर उनके सिद्धांत के दायरे में है।

प्रत्यक्षवाद	अनुभववाद
प्रत्यक्षवाद के भीतर डेटा सिद्धांत संचालित है और सिद्धांत की सटीकता का परीक्षण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।	दूसरी ओर अनुभववाद, शोध का एक तरीका है जिसने अपने डेटा संग्रह प्रक्रिया का मार्गदर्शन करने वाले सिद्धांत को स्पष्ट रूप से संदर्भित नहीं किया है। इस प्रकार अनुभववाद के लिए यह तथ्य है जो स्वयं के लिए बोलता है।

To be Cont.

- इस खंड में हम प्रत्यक्षवाद पर चर्चा करने जा रहे हैं, एक ऐसा तरीका, जो अनुशासन को अत्यधिक संज्ञानात्मक प्रतिष्ठा देने की मांग करता है, और अपने अनुयायियों को यह विश्वास दिलाना चाहता है कि समाजशास्त्र भी एक विज्ञान हो सकता है और अनुभवजन्य अवलोकन, कटौतीत्मक, तर्क और कानूनों या सार्वभौमिक सामान्यीकरण के निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति सिद्धांतों का पालन कर सकता है।
- तथ्य की बात करें तो, एक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र की यह आत्म-धारणा तीन उद्देश्यों की सेवा करना चाहती है –

  (क) इसने समाजशास्त्र को मानविकी और दर्शन से एक अनुभवजन्य विज्ञान के रूप में अलग किया;

  (ख) इसने समाजशास्त्री को एक पेशेवर पहचान दी, जो जाति, वर्ग और लिंग से निकलने वाली सीमित पहचान से दूर रहना चाहे, और अधिक उद्देश्य / तर्कसंगत सार्वभौमिक फैशन में सोचें;

  (ग) जो ज्ञान यह प्राप्त करेगा, वह हमारे समाज को फिर से संगठित करने और एक बेहतर दुनिया बनाने में मदद करेगा।

प्रत्यक्षवाद की मुख्य विशेषताएं (SALIENT FEATURES OF POSITIVISM)

- यह विधि की एकता में विश्वास करता है। जहां तक जांच का तरीका है, समाजशास्त्र प्राकृतिक विज्ञानों से अलग नहीं है।
- यह निष्पक्षता और मूल्य तटस्थता का जश्न मनाता है। इसलिए, यह ज्ञाता को ज्ञात, वस्तु से वस्तु, और तथ्य से मूल्य से अलग करता है।
- समाजशास्त्र सामान्य ज्ञान नहीं है। यह व्याख्यात्मक सिद्धांतों पर टिकी हुई है, जो अनुशासन को एक सार्वभौमिक चरित्र देते हैं।
- समाजशास्त्र ज्ञान का एक औपचारिक और संगठित निकाय है, जिसकी विशेषता विशिष्ट कौशल और तकनीकी-वैज्ञानिक शब्दावली है।
- समाजशास्त्र अमूर्तता और सामान्यीकरण के लिए प्रयास कर सकता है। मानवीय अनुभवों को कानून की तरह सामान्यीकरण के माध्यम से समझाया जा सकता है।
- समाज के वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग सामाजिक इंजीनियरिंग के लिए किया जा सकता है।

प्रत्यक्षवाद का उद्गम (ORIGIN OF POSITIVISM)

- जैसा कि हम याद करते हैं, 1300 और 1600 के बीच की अवधि यूरोप में महान परिवर्तन का समय था।
- जबकि धार्मिक आंदोलन या सुधार हो रहा था, यूरोप में एक और क्रांति हुई जिसने इंसान के दुनिया देखने का तरीका स्थायी रूप से बदल दिया।
- 1500 से पहले, विद्वानों ने आम तौर पर फैसला किया कि बाइबल और चर्च के अनुसार क्या सच या गलत था। हालांकि, कुछ यूरोपीय लोगों ने चर्च के इस विचार को चुनौती दी।
- यह वैज्ञानिक क्रांति की अवधि थी जो सावधानीपूर्वक समझ और स्वीकृत मान्यताओं पर सवाल उठाने की इच्छा पर आधारित थी।
- इसके अलावा, वैज्ञानिक क्रांति का आधार वैज्ञानिक पद्धति थी जो ब्रह्मांड के कामकाज पर सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए अवलोकन और प्रयोग करती थी। शोध का यह तरीका प्राकृतिक विज्ञान की शुरुआत है।
- विज्ञान, जो एक निश्चित प्रक्रिया के माध्यम से प्रभावी वैज्ञानिक पद्धति – परीक्षण और मान्यता – पर आधारित है, को अक्सर 'सत्य' की खोज के अनुभवजन्य अध्ययन और अमूर्त कानूनों की स्थापना के लिए एक विषय उन्मुख के रूप में वर्णित किया जाता है, और इन विधियों से उत्पन्न ज्ञान वह वैज्ञानिक ज्ञान है जिसे ज्ञान के श्रेष्ठ रूप के रूप में स्वीकार किया जाता है।

To be Cont.

- कोपरनिकस, गैलीलियो या न्यूटन जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया, जो चिकित्सा, भौतिकी और जीव विज्ञान में खोजों और आविष्कारों को लाया।
- हालांकि, वैज्ञानिक पद्धति रातोंरात विकसित नहीं हुई।
- 1600 के दशक के दो महत्वपूर्ण विचारकों, फ्रांसिस बेकन और रेने डेसकार्टेस के काम ने विधि को आगे बढ़ाने में मदद की।
- फ्रांसिस बेकन जो एक अंग्रेज स्टेट्समैन और लेखक थे, विज्ञान के बारे में भावुक थे और दुनिया की बेहतर समझ में विश्वास रखते थे।
- अमूर्त सिद्धांतों से तर्क करने के बजाय, उन्होंने वैज्ञानिकों से प्रयोग करने और निष्कर्ष निकालने का आग्रह किया। इस दृष्टिकोण को अनुभववाद या प्रायोगिक विधि कहा जाता है।
- फ्रांस में, रेने डेसकार्टेस ने विज्ञान में रुचि ली और विश्लेषणात्मक ज्यामिति विकसित की। इसने वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण नया उपकरण प्रदान किया। हालांकि, बेकन के विपरीत, डेसकार्टेस ने प्रयोग के बजाय गणित और तर्क का उपयोग किया।

फ्रांसिस बेकन (1561-1626)
FRANCIS BACON (1561-1626)

- फ्रांसिस बेकन ने हमें पहले निष्पक्षता की महत्वपूर्ण धारणा सिखाई। उनका मत था कि सत्य वहां मौजूद है लेकिन मानव के पास मौज़ूद पूर्वधारणाओं और पूर्वाग्रह से ग्रस्त और विकृत है।
- इसलिए उन्होंने दार्शनिक सोच की एक प्रणाली को उजागर किया जो हमें सच्चाई को उसकी सभी प्रामाणिकता के साथ तलाश करने और समझने में मदद करेगी।
- बेकन आदर्शों की चार वर्णों का प्रस्ताव करता है जो मूल्य तटस्थ (value neutral) सत्य की प्राप्ति की प्रक्रिया में बाधा डालते हैं।
- मूल्य तटस्थता का मतलब है कि किसी भी मूल्य को दूर करना जो मानव जाति की पूर्णता के लिए ज्ञान की खोज को रोकता है।
- उन्होंने चार वर्गों की आदर्शों का उल्लेख किया और ये मन के आदर्श हैं जो सभी मनुष्यों के लिए बुनियादी हैं क्योंकि यह एक तरीका है जिससे सभी दुनिया को सभी को देखने की कोशिश करने का जैसा हर कोई चाहता है।
- इससे सच्चाई का परिमार्जन होता है और हर कोई वास्तविकता के बारे में अपना विचार बनाता है।

To be Cont.

- मांद के आदर्श दुनिया को देखने के लिए व्यक्तिगत झुकाव पर निर्भर करती हैं।
- विशेष सामाजिक सेटिंग्स, पूर्वाग्रहों और समाजीकरण के विभिन्न तरीकों के लिए निश्चित अनुभव किसी के दृष्टिकोण को अवस्थापित करता है चाहे यह निराशावादी, आशावादी, क्रांतिकारी या रूढ़िवादी हो।
- बाजार की प्रतिमाएं विभिन्न स्थानों में लोगों की बातचीत से निकलने वाली प्रतिमाएं हैं जो सभाओं को प्रोत्साहित करती हैं।
- भाषाई सहायता के साथ सहभागिता से भ्रम पैदा होता है क्योंकि श्रेणियों और दैनिक इंटरैक्शन में उपयोग किए जाने वाले अर्थ कभी भी मुक्त नहीं होते हैं और तनाव पैदा करते हैं और ज्ञान का एक तरफा सृजन करते हैं।
- थिएटर की प्रतिमाएं विशिष्ट हठधर्मिता और दर्शन की प्रणालियों के साथ लोगों के मन को झंकृत करती हैं।

रेने देकार्त (1596-1650)
RENE DESCARTES (1596-1650)

- एक अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति जिसने आत्मज्ञान की परिणति की गति को बढ़ाया, वह डेकार्टेस था।
- उनका मत था कि यह उनकी इंद्रियाँ जिसके माध्यम से उन्हें पता चलता है कि दुनिया प्रामाणिक नहीं है।
- उनके आसपास की दुनिया की ये समझ केवल भ्रम है।
- लेकिन इसी समझ ने उन्हें यह एहसास दिलाया कि यदि व्यक्ति सभी व्यक्तिपरक विचारों को दूर कर देता है, तो मन इन सभी भ्रमों को दूर कर सकता है।
- उन्होंने कहा कि यद्यपि शरीर को अलग किया जा सकता है, मन व्यक्तियों का मूल अस्तित्व है।
- संवेदी समझ से रहित दिमाग हमारे चारों ओर दुनिया की तर्कसंगत समझ पैदा कर सकता है।
- इस प्रकार अमूर्त अनुभववाद और बुद्धिवाद आत्मज्ञान का मुख्य आधार बन गया।

कार्ल पापर (1902-1994) एवं थॉमस कुहन (1922-1996)
KARL POPPER (1902-1994) AND THOMAS KUHN (1922-1996)

- कार्ल पॉपर ने विज्ञान में तार्किक सकारात्मकता के प्रभुत्व की आलोचना की जिसके कारण जांच के लिए किसी भी समस्या को देखने का एक तरीका संशोधित हुआ।
- आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत की तरह पॉपर ने विज्ञान के सापेक्ष चरित्र पर जोर दिया।
- विज्ञान स्थिर और निरपेक्ष नहीं है, लेकिन विश्लेषण और मिथ्याकरण के अधीन हो सकता है।
- पॉपर की राय थी कि ज्ञान के किसी भी स्रोत से प्राप्त जानकारी मिथ्याकरण और परिवर्तन के लिए प्रतिरक्षा नहीं है। इसलिए विज्ञान को परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होना चाहिए।
- विज्ञान के एक अन्य दार्शनिक थॉमस कुहन की राय थी कि विज्ञान प्रतिमानों पर निर्भर करता है।
- कल्पित ज्ञानक्षेत्र या दृष्टिकोण जैसे प्रतिमान, जिसके माध्यम से हम वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इसके परिणामस्वरूप ज्ञान की प्राप्ति होती है जो निरपेक्ष नहीं है, किसी भी जानकारी को, जो एक प्रतिमान के भीतर गिरने में विफल रहती है, बाहर कर दिया जाता है।
- इसलिए ये बहिष्करण एक एकतरफा विज्ञान बनाते हैं जो चिंतन के लिए खुला होना चाहिए।

धन्यवाद